REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 14 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2024

ग्रामीण एवं शहरी विद्यालय के विद्यार्थियों में आत्मबोध के प्रति अध्ययन

डॉ. नाजिया कौशर[1] , डॉ. कृष्ण कुमार पाण्डेय[2]
[1]सहायक प्रध्यापक, शिक्षा विभाग, डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय, करगीरोड, कोटा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़।
[2]सहायक प्रध्यापक, शिक्षा विभाग, डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय, करगीरोड, कोटा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़।

सारांशः–

सामाजिक मनोविज्ञान के अनुसार आत्मबोध सामाजिक विश्लेषण में सहायक होता है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम दूसरों का भी मूल्यांकन करते है। मानव के विकास में आत्मबोध का महत्वपूर्ण योगदान होता है। प्रस्तुत लघुशोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत लघुशोध में न्यादर्श के रूप में बिलासपुर जिले के ग्रामीण एवं शहरी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के 120 छात्र–छात्राओं को लिया गया है। शोधकर्ता द्वारा चयनित किए गए न्यादर्श पर प्रदर्त्त संकलन हेतु Self-concept Questionnaire (SCQ) By Dr. Raj Kumar Saraswat मापनी का प्रयोग किया गया है। इस अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों से यह बात स्पष्ट होती है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के छात्र–छात्राओं में आत्मबोध का विद्यालय समाज व वातावरण में समायोजन स्तर पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

प्रस्तावना –

भारतीय मनोविज्ञान में आत्मबोध आत्मा मन व चेतना का समग्र रूप है। भारतीय मनोविज्ञान अंतः करण की बात करता है एवं धर्म से संबध्द होकर मोक्ष की ओर उन्मुख है, साथ ही भारतीय मनोविज्ञान मानव चेतना की विभिन्न अवस्थाओं का गहराई से अध्ययन करता है। अतः भारतीय मनोविज्ञान को मनोविज्ञान न कहकर आत्मविज्ञान कहना अधिक उचित होगा। सामाजिक मनोविज्ञान के अनुसार आत्मबोध सामाजिक विश्लेषण में सहायक होता है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम दूसरों का भी मूल्यांकन करते है। मानव के विकास में आत्मबोध का महत्वपूर्ण योगदान होता है।

सर्वप्रथम आत्मबोध या चिंतन में आत्मा को लिया गया, उसके पश्चात् मन को और अंत में चेतना को लिया। इस प्रकार इसके समंग्र रूप को आत्मबोध का नाम दिया गया। यद्पि 1970–80 के दशक में आत्मबोध पर अनेक शोध पत्र लिखे गये, परंतु धीरे–धीरे इसमे रूचि कम होते गई। लेकिन अब इसे पुनर्जीवित कर नई प्रसिद्धि प्रदान की जा रही है। यह महसूस किया जा रहा है कि जीवन चक्र में आत्म विश्लेषण से अधिक अन्य किसी सिद्धांत का महत्व नही है, इसी के द्वारा हमे स्व–अस्तित्व का एहसास होता है संसार में हमारा क्या स्थान है, इसका अभ्यास होता है।

इन सभी तथ्यों का अध्ययन मनोवैज्ञानिक दृष्टिकाण से किया जाना चाहिए, क्योंकि शिक्षा में इनका अत्याधिक महत्व है। यह शिक्षा अध्यापकों , अधिकारियों एवं विद्यार्थियों के मध्य अनुकूल वातावरण निर्मित करने में सहायक सिध्द होगी।

सर्वप्रथम आत्मबोध या चिन्तन में आत्मा को लिया गया, उसके पश्चात् मन को और अंत में चेतना को लिया गया। इस प्रकार इसके समग्र रूप को **आत्मबोध** का नाम दिया गया है। यह एक प्रक्रिया है जिसमे मनोवैज्ञानिक क्रियाओं का बोध होता है। बोध का अर्थ होता है जिसमे आचरण तथा व्यवहार के महत्व की जानकारी दी जाती है। इसे बोध कहते है। इन अर्थों में इससे यह स्पष्ट होता है कि आत्मबोध ऐसी प्रक्रिया है, जिससे व्यक्ति के आचरण एवं मानसिकता का ज्ञान हाता है। मानव जीवन के लिए आत्मबोध एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है, जो मानव के आचरण एवं मानसिकता को व्यक्त करता है। उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यालय के विद्यार्थियों की व्यवस्था अच्छी होनी चाहिए, तब शिक्षा के क्षेत्र में आत्मबोध का सही अध्ययन होगा।

अध्ययन का औचित्य –

आत्मबोध का व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान है। आत्मबोध के चार महत्वपूर्ण पक्ष हैं–

1. व्यक्ति स्वयं की पहचान कैसे रखता है?
2. स्वयं का वह कैसा मूल्यांकन करता है?
3. स्वयं के बारे में वह क्या सोच रखता है?
4. अपने विभिन्न कार्यो से कैसे अपना बचाव करने का प्रयास करता है?

युवाओं के आचरण एवं मानसिकता का ज्ञान आदि कि अध्ययन की आवश्यकता को देखते हुए शोधकर्ता ने इस शोध के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यालय के विद्यार्थियों का उनके आत्मबोध के प्रति जागरूकता साकारात्मक सोच, व्यक्तिगत तथा वाह्य जगत से उनके संबंध आदि का बोध कराता है इनके विषय में जानकारी प्राप्त करना।

समस्या कथन –

ग्रामीण एवं शहरी विद्यालय के विद्यार्थियों में आत्मबोध के प्रति अध्ययन

प्रस्तुत पदों की कियात्मक परिभाषा–

शोध अध्ययन में प्रयुक्त कठिन पदों की परिभाषायें निम्न लिखित है–

आत्मबोध–

आत्मबोध एक नक्सा है, जिसमें एक व्यक्ति कठिनाईयों एवं चुनौतियों के समय स्वयं को समझने के लिए परामर्श करता है जैसे कि 'मैं' और 'मै स्वयं' ये प्रत्येक में पाया जाता है।

उच्चतर माध्यमिक स्तर :–

माध्यमिक शिक्षा का उच्चस्तरीय स्तर (10+2) को उच्चतर माध्यमिक के नाम से जाना जाता है।

अध्ययन का उद्देश्य –

- उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के विद्यार्थियों में आत्मबोध के प्रति अध्ययन करना।
- उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण विद्यालयों के छात्र– छात्राओं में आत्मबोध के प्रति अध्ययन करना।
- उच्चतर माध्यमिक स्तर के शहरी विद्यालयों के छात्र– छात्राओं में आत्मबोध के प्रति अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ –

HO_1 उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के विद्यार्थियों में आत्मबोध के प्रति सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

HO_3 उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण विद्यालय के छात्र–छात्राओं में आत्मबोध के प्रति सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

HO_3 उच्चतर माध्यमिक स्तर के शहरी विद्यालय के छात्र– छात्राओं में आत्मबोध के प्रति सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

अध्ययन का परिसीमन –

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता द्वारा बिलासपुर जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र को लिया गया है। प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता द्वारा कक्षा 9वीं से 12वीं के छात्रों को लिया गया है।

अनुसंधान प्रविधि

शोध विधि–

अध्ययन विधि अनुसंधान को परिचालित करने का ढंग है। जो चयनित की गई समस्या के प्रकृति के अनुरूप निर्धारित की जाती है। प्रस्तुत शोधकर्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या एवं न्यादर्श –

प्रस्तुत लघुशोध में न्यादर्श के रूप में बिलासपुर जिले के ग्रामीण एवं शहरी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के 120 छात्र–छात्राओं को लिया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :–

समस्या के अध्ययन के लिए उपकरण की आवश्यकता होती हैं। प्रदत्तों के संकलन में उपकरण की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। उपकरण ही शोधकर्ता को उसके लक्ष्य तक पहुँचाता है। शोधकर्ता द्वारा चयनित किए गए न्यादर्श पर प्रदर्त्त संकलन हेतु Self-concept Questionnaire (SCQ) By Dr. Raj Kumar Saraswat मापनी का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन के चर :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नलिखित चर है –

स्वतंत्र चर – छात्र एवं छात्राओं।

आश्रित चर – आत्मबोध ।

प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियॉ :–

1. Mean (माध्य)
2. Standard Deviation (मानक विचलन)
3. Standard Error Deviation (मानक त्रुटि विचलन)
4. टी–मूल्य परिक्षण (t-test)
5. स्वतंत्रता की कोटी (Degree of Freedom)

आंकड़ो का विश्लेषण एवं व्याख्या –

परिकल्पना –1

$H0_1$ उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के विद्यार्थियों में आत्मबोध के प्रति सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक – 1

S.N.	विद्यालय	N	Mean	SD	S_{ED}	t-test	df	सारणीगत मान	परिणाम
1.	ग्रामीण	60	125.33	12.62	2.34	0.85	118	0.05 = 1.98	स्वीकृत
2.	शहरी	60	127.33	13.09				0.01 = 2.61	

व्याख्या एवं निष्कर्ष :–

सर्वप्रथम परिकल्पना क्रमांक $H0_1$ जिसके परीक्षण के लिए उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यालय के विद्यार्थियों में आत्मबोध के लिए छात्र–छात्राओं की संख्या 60–60 लिया गया। इसके लिए मध्यमान तथा मानक विचलन (SD) अलग–अलग प्राप्त किया गया। इसकी सहायता से गणना कर मध्यमान में अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए 'टी' परीक्षण किया गया। गणना द्वारा प्राप्त मान का विवरण तालिका क्रमांक–1 में दिया गया है।

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण विद्यालय के विद्यार्थी का मध्यमान (M) = 125.33 और शहरी विद्यालय के विद्यार्थियों का मध्यमान (M) = 127.33 है। मध्यमान में अन्तर की सार्थकता जाँचने हेतु 'टी' परीक्षण किया गया। जिसमें गणना से प्राप्त 'टी' का मान 0.85 है। 118 के df पर सार्थकता के लिए 'टी' का आवश्यक सारणीगत मान –

0.05 के विश्वसनीय स्तर पर –1.98

0.01 के विश्वसनीय स्तर पर –2.61

गणना से प्राप्त 'टी' का मान सारणीगत मान से कम है अथवा दोनों मानों से कम है।

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर प्रस्तुत परिकल्पना क्रमांक $H0_1$ स्वीकृत की जाती है, अर्थात् उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के विद्यार्थियों में आत्मबोध के प्रति सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना –2

$H0_2$ उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण विद्यालय के छात्र–छात्राओं में आत्मबोध के प्रति सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक – 2

S.n.	ग्रामीण विद्यार्थी	N	Mean	SD	S_{ED}	t-test	df	सारणीगत मान	परिणाम
1.	छात्र	30	124.66	11.97	3.26	0.411	58	0.05 = 2.00	Lohd`r
2.	छात्राएँ	30	126.00	13.25				0.01 = 2.66	

व्याख्या एवं निष्कर्ष :–

सर्वप्रथम परिकल्पना क्रमांक $H0_2$ जिसके परीक्षण के लिए उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण विद्यालय के विद्यार्थियों में आत्मबोध के लिए छात्र एवं छात्राओं की संख्या 30–30 लिया गया। इसके लिए मध्यमान तथा मानक विचलन (SD) अलग–अलग प्राप्त किया गया। इसकी सहायता से गणना कर मध्यमान में अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए 'टी' परीक्षण किया गया। गणना द्वारा प्राप्त मान का विवरण तालिका क्रमांक 4.2 में दिया गया है।

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण विद्यालय के छात्र का मध्यमान (M) = 124.66 और ग्रामीण विद्यालय के छात्राओं का मध्यमान (M) = 126.00 है। मध्यमान में अन्तर की सार्थकता जाँचने हेतु 'टी' परीक्षण किया गया। जिसमें गणना से प्राप्त 'टी' का मान 0.411 है। 58 के df पर सार्थकता के लिए 'टी' का आवश्यक सारणीगत मान –

0.05 के विश्वसनीय स्तर पर –2.00

0.01 के विश्वसनीय स्तर पर –2.66

गणना से प्राप्त 'टी' का मान सारणीगत मान से कम है अथवा दोनों मानों से कम है।

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर प्रस्तुत परिकल्पना क्रमांक $H0_2$ स्वीकृत की जाती है, अर्थात् उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं में आत्मबोध के प्रति सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना –3

$H0_3$उच्चतर माध्यमिक स्तर के शहरी विद्यालय के छात्र–छात्राओं में आत्मबोध के प्रति सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक – 3

S.N.	शहरी विद्यार्थी	N	Mean	SD	S_{ED}	t-test	df	सारणीगत मान	परिणाम
1.	छात्र	30	125.16	12.33	3.37	1.28	58	0.05 = 2.00	स्वीकृत
2.	छात्राएँ	30	129.50	13.81				0.01 = 2.66	

व्याख्या एवं निष्कर्ष :–

सर्वप्रथम परिकल्पना क्रमांक $H0_3$ जिसके परीक्षण के लिए उच्चतर माध्यमिक स्तर के शहरी विद्यालय के विद्यार्थियों में आत्मबोध के लिए छात्र एवं छात्राओं की संख्या 30–30 लिया गया। इसके लिए मध्यमान तथा मानक विचलन (SD) अलग–अलग प्राप्त किया गया। इसकी सहायता से गणना कर मध्यमान में अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए 'टी' परीक्षण किया गया। गणना द्वारा प्राप्त मान का विवरण तालिका क्रमांक 4.3 में दिया गया है।

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि शहरी विद्यालय के छात्र का मध्यमान (M) = 125.16 और शहरी विद्यालय के छात्राओं का मध्यमान (M) = 129.50 है। मध्यमान में अन्तर की सार्थकता जाँचने हेतु 'टी' परीक्षण किया गया। जिसमें गणना से प्राप्त 'टी' का मान 1.28 है। 58 के df पर सार्थकता के लिए 'टी' का आवश्यक सारणीगत मान –

0.05 के विश्वसनीय स्तर पर –2.00

0.01 के विश्वसनीय स्तर पर –2.66

गणना से प्राप्त 'टी' का मान सारणीगत मान से कम है अथवा दोनों मानों से कम है।

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर प्रस्तुत परिकल्पना क्रमांक $H0_3$ स्वीकृत की जाती है, अर्थात् उच्चतर माध्यमिक स्तर के शहरी विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं में आत्मबोध के प्रति सार्थक अंतर नहीं है।

निष्कर्ष –

इस अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों से यह बात स्पष्ट होती है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के छात्र–छात्राओं में आत्मबोध का विद्यालय समाज व वातावरण में समायोजन स्तर पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

शिक्षकों को चाहिए कि बालक ऐसे उद्देश्य अपने सामने रखे जो वास्तविक हो और जो कि उनकी योग्यता के अनुरूप हो। वर्तमान समय में व्यक्ति ऐसे उद्देश्यों को सामने रखने लगे हैं जो कि वास्तविक से दूर हैं, योग्यता से अधिक आंकाक्षा पर निर्भर होते है। यह विफलता की भावना को बढ़ाते हैं और विफलता ऐसे आत्मबोध को बढ़ावा देते हैं जो कि नकारात्मक, अस्वस्थ्य एवं असामाजिक हैं जो उनके व्यक्तित्व के विकास को बहुत हानि पहुँचाते हैं।

शोध अध्ययन का निहितार्थ :–

आत्मबोध व्यक्ति के जीवन में संतुलन का मुख्य आधार होता है। उच्च आत्मबोध माध्यमिक स्तर के नवीन जिम्मेदारियों को स्वीकार कर शैक्षणिक उपलब्धि के लिए एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में दायित्वहीन होने में सहायक होता है। आत्मबोध निरंतर स्वाभिमान की रक्षा करता है।

यदि उच्चतर माध्यमिक स्तर के बालक के नकारात्मक आत्मबोध को बदल सके तो निश्चित ही वह राष्ट्र को एक नई दिशा प्रदान देगी। अतः निष्कर्ष रूप में शोध अध्ययन का आधार यह है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के विद्यार्थियों में आत्मबोध के प्रति उसके समायोजन पर प्रभाव पड़ता तथा विद्यार्थियों कि उन्नति तथा अवनति का आधार बनता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1. डॉ. भटनागर ए. बी. एवं डॉ. श्रीमति मीनाक्षी भटनागर (2007) **''मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूलयाकंन''** आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
2. **Bandura A. (1977)**. "Self efficacy the exercise of control Freeman". New york.
3. **Brantley H.J., Clifford E. (1979)** "Congnitive, self-concept, and body image measures of normal, cleft palate and obese adolescents. Cleft Palate J :1:177.
4. **Bharthi, G. (1984),** "A study of self concept and achievement Motivation of early adolescents." Ph.d. psy.Vol, P.541.
5. **Gupta p. (1984)** "Self concept, dependency and adjustment pattern of adanoloned Institutimalized preadopsents". Vol,1 P.369-70.
6. **Kale, P.S. (1982),** "A study of the development of self concept at preadolescent level with Reference to same family and school factors".
7. **King, G.A. : Shult I.Z. Sted, K. Gilpin, M & Cathers T. (1993)**- "Self Evaluation and self concept of adolescents with physical disabilities", American Journal of occupational therapy 47.2.132-140.
8. **Kabal D., Musek J. (2001) "**Self and academic achievement Slovenia and France. Personality and individual difference" 30(5): 887-899.
9. **Laurence, W.E. and Brown, D. (1976)**. "An investigation of intelligence, self concept, social-economic status, race and sex as predictors of career maturity". Journal of vocational Behaviour ,9,43-52.

डॉ. नाजिया कौशर
सहायक प्रध्यापक, शिक्षा विभाग, डॉ. सी. वी. रमन विश्वविद्यालय, करगीरोड, कोटा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़।